**कुंन के रोज की साहेदी, देवे एही उमत।**
**सो कहे उस बखत की, जो ल्यावे एह हुज्जत।। १९ ।।**

जिस दिन 'कुंन' कहने से ब्रह्माण्ड बना, उसकी गवाही यही मोमिन देंगे, क्योंकि परमधाम में यही मोमिन थे और यही मोमिन उस वक्त को कह सकते हैं।

**तौरेत आई नूर बिलंद से, आखिर उमत करी बेसक।**
**भई चिन्हार महंमद मुसाफ, जैसे पेहेचानने का हक।। २० ।।**

परमधाम से कलस (तौरेत) की किताब आई जिसने ब्रह्मसृष्टि को बेशक किया। इस ज्ञान से श्री प्राणनाथजी की और कुरान की पहचान हुई। उससे श्री प्राणनाथजी को खुदा के रूप में पहचाना गया।

**सब सिफतें एक गिरोह की, लिखी जुदी जुदी जंजीर।**
**कोई पावे न दूजा माएना, बिना महंमद फकीर।। २१ ।।**

कुरान के अलग-अलग प्रसंगों में इसी एक मोमिन की जमात की सिफत लिखी है। बिना आखिरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) के इन भेदों को कोई खोल नहीं पाता।

।। प्रकरण ।। ७१ ।। चौपाई ।। ९०८ ।।

**जंजीरां मुसाफ की, मोतियों में परोइए जब।**
**जिनसें जिनस मिलाइए, पाइए मगज माएने तब।। १ ।।**

कुरान की आयतों की हकीकत जो कुरान में अलग-अलग सिपारों में लिखी है, उन प्रसंगों को मिलाकर इकट्ठा कर देखें, तभी उनकी हकीकत वाले छिपे भेद खुलते हैं।

**देऊं हरफ हरफ की आयतें, जो हादिऐं खोले द्वार।**
**सब सिफत खास गिरोह की, लिखी बिध बिध बेसुमार।। २ ।।**

श्री छत्रसालजी कह रहे हैं कि श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान की आयतों के एक-एक शब्द के अर्थ खोल दिए हैं। इन सब आयतों में खास गिरोह (ब्रह्मसृष्टि) की सिफत का वर्णन है जो अलग-अलग तरीकों से लिखी है।

**कलाम अल्ला की इसारतें, खोल दैयां खसम।**
**महामत पर मेहेर मेहेबूबें, करी ईसे के इलम।। ३ ।।**

कुरान की इशारत (संक्षिप्त कथन) को श्री राजजी महाराज ने खोल दिया है। महामति के ऊपर श्री प्राणनाथजी ने सतगुरु देवचन्द्रजी (श्यामा महारानी) के तारतम वाणी के ज्ञान से कृपा की है। जिनसे यह भेद खुले।

**ब्रह्मसृष्ट वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान।**
**कई बिध की बुजरकियां, देखो साहेदी कुरान।। ४ ।।**

ब्रह्मसृष्टि को वेद पुराण में ब्रह्म के समान बताया है और इन ब्रह्मसृष्टि की सिफत कुरान में भी कई तरह से लिखी है (जिसकी गवाही कुरान में लिखी है)।

**कहे छत्ता मगज मुसाफ के, जिनस जंजीरां जोर।**
**सब सिफत खास गिरोह की, ए समझें एही मरोर।। ५ ।।**

श्री छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान की सार वाली आयतों में खास गिरोह (ब्रह्मसृष्टि) की सिफत है और इसके भेद वही ब्रह्मसृष्टि ही समझ सकती हैं।

।। प्रकरण ।। ७२ ।। चौपाई ।। ९१३ ।।

Nijanand App